

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



दूसरा वाअज़

३ मोहरमुल हराम १४४० हि

दारुस सकीना मुंबई

सैयदना ताहेर फखरुद्दीन त.उ.श.

वाअज़ सारांश

अल दाई अल फातेमी सैयदना ताहेर फखरुद्दीन त.उ.श. ने इमाम हुसैन अ.स. की अज़ा की दूसरी मजलीस में मुमिनीन को खिताब करते हुए फरमाया कि ए एहले बैतुन नुबुव्वत के सफ़िने में सवार होने वाले मुमिनीन! मोहम्मद, अली, फातेमा, हसन और हुसैन, खम्सत अतहार, सफ़िनतुन नजात, जो सब हक़ की दावत को काइम करने वाले हैं। जो उन्हें ताबे हो कर, सफ़िने में सवार हो, वे नजात हांसिल करते हैं, जो सवार न हो वे दीन और दुनिया दोनों में खोटीये हैं। अपन सफ़िने में सवार हॉने वाले हैं, किस राह पर कि यह अकीदा रख कर कि हर ज़मान में पंजेतन के वारिस इमाम उज़ ज़मान अ.स. मौजूद है।

सफ़िने मे सवार होने की माअना यह है कि उनकी मोहब्बत, उनकी मोहब्बत करे तो नजात हांसिल है।

अपन सफ़िनतुन नजात में सवार क्यों है, हुसैन कि दोआ के सबब। अक्वलीन आखेरीन का दैन अदा करनेवाले हुसैन है। रसूलुल्लाह स.अ. को इमाम हुसैन

ने दैन अदा करने का जो वादा किया वह ज़िक्र सैयदना त.उ.श. ने फरमाई।

मौलाना ने ज़िक्र फरमाई कि हुसैन की ज़ात मुबारक सफीनतुन नजात है, करबला में खुशकी में आप ने सफीना चलाया, हुसैन के दाई सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन फरमाते है “फुल्कुल हुसैने बे करबला...”। इमाम हुसैन दूसरी तारीख मोहर्रमुल हराम को करबला पहुंचे, मौलाना ने फरमाया आज हम हर रोज़ हुसैन की मजलीस में जमा होते है, हुसैन को याद करने। दिल से सोचो कि हम हुसैन के साथ करबला में है, फ़िदा होने आये है, ज़िक्र करने, आँखों से आँसू रवां करने आये है।

आगे मौलानल मन्नान ने फरमाया कुरआन मजीद में अमसाल बयान किए गए है, कुरआन में सफीना का मसल (माअना) क्या है के दावत। जो साहेब दावत करते है उनकी ज़ात ही दावत है। वे सफीनतुन नजात है।

पैदाइश का सबब क्या है अपन जानते है, अफज़ल हाल में हम लौटे इस लिए यह पैदाइश हुइ है, इसी के लिए दुनिया में हक की दावत काइम है। जो इस दावत को जवाब दे, सफिने में सवार हो, वह कुदुस के किनारे पहुंचे।

इख्वान उस सफा में से एक जज़ीरे की नादिर हिकायत सैयदना ने बयान फरमाई।

आज दूसरी मजलीस है, नूह नबी की ज़िक्र की मजलीस है। मौलाना ने नूह नबी स.अ. की ज़िक्र फरमाई।

सफिने को फुल्क भी कहा गया है - फुल्कून नजात - कुरआन मजीद में फुल्क २१ जगह है, सफीना ४ जगह है।

फुल्क के तीन हुरूफ़ है, तीन फसल मौलाना त.उ.श. ने बयान फरमाई।

फसल: नूह के दौर की ज़िक्र फरमाई
कुरआन में नूह नबी को खुदा फरमाते हैं,

واصنع الفلك باعيننا ووحينا

सफिने को हमारी आँखों के सामने हमारे वहये से
बनाओ।

कौम में से जिन लोगो ने नूह को जवाब नहीं दिया,
जब तूफ़ान आया, वे सब गरक हुए। मगर नूह और
सफीना में सवार बच गए।

एक माअना यह है कि नूह ने अपने वसी को काइम
फरमाया, वसी सफिने की शान में है।

दूसरी फसल: रसूलुल्लाह स.अ. फरमाते हैं:

مثل اهل بيتي فيكم كسفينة نوح من ركبها نجا ومن تخلف عنها غرق

मेरे एहले बैत तुम्हारे दरमियाँ नूह के सफिने के
मिसल है, जो उनके साथ होगा वह नजात हांसिल

करेगा, और जो उनसे तखल्लुफ़ करेगा, पीछे रहेगा, गरक हो जाएगा। दोनों हालत की बातें फरमाई दी साथ में, सवार नहीं होंगे तो गरक हो जाओगे।

रसूलुल्लाह स.अ. के मेहराब और मिम्बर के वारिस अली का हक छीना गया, तूफ़ान के बाद तूफ़ान, इमाम हसन, हुसैन और ज़ैनुल आबेदीन के ज़मान में भी तूफ़ान आये, मगर दावत काइम है।

तीसरी फसल: आले मोहम्मद के दोआत नजात का सफीना है

दोआत इमाम की दावत काइम करते हैं। इमाम उज़ ज़मान से दोआत को कितनी नज़दीकी है कि, “बे आअयोनेना”, और इमाम की ताईद की सवारी उनके तरफ जारी है “व वहयेना”।

सैयदना ताहेर सैफुद्दीन रि.अ. फरमाते थे कि मैं सैंकड़ो मुमिनीन को कुदुस के किनारे पहुंचा कर आया

हूँ, और तुम्हे अपने साथ ले कर चलता हूँ। सैयदना फखरुद्दीन ने फरमाया कि आज ममलूके आले मोहम्मद उनका वारिस हूँ, तुम्हें यह कहता हूँ, यह हक की दावत है, सफीनतुन नजात है, तुमने दावत को जवाब दिया है, वल्लाहे इलल जन्नते इन्शाअल्लाह, कुदुस के किनारे पहुँचने वाले है।

मौलाना ने फ़रमाया कि मुमिन मिसाक दे तो यह समझ कर कि अपने जान की नजात के लिए दावत में शामिल हो रहा हूँ। कोई क्लब या सोसायटी समझ कर नहीं, बलके अपने जान की नजात के लिए।

कितने मुश्किल वक्त में हक की दावत को दोआत ने संभाला है।

सैयदना बुरहानुद्दीन आका, आप के ज़मान में बिदअत की फितनत होना शुरू हुआ। ओलमा-उस-सू गलत तसव्वुर देने लगे। कहने लगे ज़ाहिर-बातिन अलग। मिसाक में ही कसम है कि ज़ाहिर-बातिन अलग तो

नहीं करोगे। ओलमा-उस-सू (इल्म का गलत इस्तेमाल करने वाले) काला पानी पिलाते हैं। कहते थे ज़ाहिर में है, बातिन में कोई और है, यह सब बातें हमने उनसे सुनी हैं। कहते थे ज़ाहिर में है माज़ून, बातिन में दरअसल कोई और माज़ून है।

बुरहानुद्दीन आका के वफ़ात के बाद के हालात की ज़िक्र फरमाई। बावाजी साहेब ने अजब शान से, दावत के सफ़िने के कप्तान बन कर सफ़िने को चलाया, चाहे कितने ही मौज आए। सैयदना अब्दुल कादिर नजमुद्दीन के वारिस, मौलाना कुत्बुद्दीन दारुस सकीना तशरीफ़ लाए। जो मुमिनीन ने आप को जवाब दिया, बुरहानुद्दीन आका के मनसूस को मौला माना, वे सफ़ीनतुन नजात में सवार हुए, कुदुस के किनारे पहुंचे और पहुँचने वाले हैं। ऐसे मुश्किल और नाज़ुक वक़्त में मौलाना कुत्बुद्दीन ने सफ़िने को चलाया। हक के दाई आप हैं। दुश्मन की गालीयों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। जो लानत बुलवाते हैं उन

पर खुदा का सख्त अज़ाब हो, उन पर उसका वबाल उतरे।

मौलाना कुतबुद्दीन की सबर और हिम्मत की अजब शान, हिम्मत काअसा, कैसी हिम्मत, चारो ओर से घिरे हुए है, हुसैन के दाई की शान देखो, किसी की परवाह नहीं, परवाह अगर है तो सिर्फ हक की, अजब आप का इखलास और सफा था।

बावन वे दाई ने सैयदना फखरुद्दीन का मिसाक लिया उस के शुकुर में ५३ वे दाई ने बावन वे दाई की शुकुर की जियाफत की। जियाफत में सैयदना बुरहानुद्दीन की गादी के पीछे एक सफीना रखा गया, सैयदना कुतबुद्दीन ने तकरीर में पुरखुलूस अर्ज़ की के मैं, आप का गुलाम, मैं फ़िदा हूँ, मेरे फरजंद, मेरे फ़रज़न्द के फरजंद आप पर फ़िदा है।

मौलानल मन्नल ने मुमिनीन को मौएज़त के नलदर जुमले फरमल।

मुमिन अपनी जिन्दगी दीन के उसूल के मुतलबिक़ गुज़ारे यह समझलल। दीन जिन्दगी कल सिर्फ़ एक हिस्सल यल कम्पार्टमेंट नहीं, सिर्फ़ लैलतुल कदर यल आशूरल में सोसलयटी के खलतिर शलमिल हो गए ऐसे नहीं, बलके दीन जिन्दगी गुज़रने की रलह है, जीने कल तरीकल है।

हम्द, सलवलत और दोआइ कलेमत के बलद, नौहल के बयलन में इमलम हुसैन ने करबलल में खुशकी में सफीनल चललल इसकी ज़िक़र फरमलई। मौललनल अली असगर की शहलदत पढ़ी और इमलम हुसैन की शहलदत के बयलन पर वलअज़ तमलम हुइ।